بدر الانوار فی آداب الآثار

का हिन्दी तरजमा



-: तस्नीफ़ :-

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ

-: तरजमा व तलख़ीस :-

मुहम्मद फारूक ख़ाँ अशरफी रिज़वी

✳ नाशिर ✳

मकताबतुल मदीना, मुंबई

ZEBNEWS.IN

PRESENTED BY

NAUSHAD AHMAD
"ZEB" RAZVI

ALLAHABAD

जो सर पे रखने को मिल जाए नाले पाके हुज़ूर !
तो फिर कहेंगे के हाँ ताजदार हम भी हैं !!

بدر الانوار فی آداب الآثار

का हिन्दी तरजमा

तबर्रुक़ात के आदाब व फ़ज़ाएल

तसनीफ़

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ बरेलवी

नाशिर

मकताबतुल मदीना,



मेमन वाड़ा रोड़,

मुंबई





بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

हुर्फ़े आगाज़

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ज़िले बरेलवी قدس سرہ ---------आलमे इस्लाम की अज़ीम शख़्सियतों में से हैं। उनकी मोमेनाना निग़ाह अपने ज़माने से आगे देख़ती थी। उन्होंने जो कुछ कहाँ, आने वाले ज़माने ने उसकी तसदीक की ------- वोह कौन थे, अल्लाह ही बेहतर जानता है ------- हमने आज तक उनको न जाना न पहेचाना ------- आज उनके विसाल के तकरीबन 75 साल बाद येह राज़ खुला के वोह इल्म व फ़न का एक समुन्दर थे -------- और हम अभी तक उस समुन्दर के साहिल तक भी नहीं पहुँच सके ------- एक इल्म वह है जो हम स्कुलों , कॉलेजों और युनिवरसिटीयों वगैरा में जाकर हासिल करते है मगर एक इल्म ऐसा भी है जो हासिल करने से भी हासिल नहीं होता ------- जो अता किया जाता हैं ------- जिस पर रब्बे करीम का फ़ज़्ल होता है उसको दिया जाता है --------- येह इल्म अम्बिया रसूल को दिया जाता है। फिर उन्हीं के सदके में उलमा व उरफ़ा को दिया जाता है ------- येह इल्म इमाम अहमद रज़ा को भी दिया गया ------- इस इल्म की एक झलक देखकर डॉ. सर ज़ियाउद्दीन, दातों तले उंगलियाँ दबाकर रह गये ------- हाँ इसी इल्म की एक झलक देखकर अमरीकी सइन्सदा (Scientist) प्रो. अल्बर्ट एफ-पोंटा, हैरत ज़दा रह गया ------- और इसी इल्म की एक झलक देखकर उलमाए अरब व अजम हैरान रह गये और पुकार उठे ------- मुज्जद्दीद - हाँ - हाँ मुज्जद्दीद ------- मुज्जद्दीदे आज़म ------- رضی اللہ عنہ ।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा अलैह रहमा के जद्दे अमजद

(पुरवज) कन्धार (अफ़गानिस्तान) के एक पठान कबीले "बड़हिज" से तअल्लुक रखते थे आला हज़रत के पुरवज अफ़गानिस्तान से मुगलों के दौर में हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए और बड़े बड़े इज़्ज़त दार ओहदो पर फ़ाइज़ रहे। वालिदे माजिद हज़रत मौलाना मुहम्मद नकी अली खॉ और दादा मौलाना मुहम्मद रज़ा अली खॉ, बुलन्द मरतबा आलिम और कई किताबों के मुसन्निफ़ (लेखक) थे।

आला हज़रत 10 शव्वाल 1272 हिजरी, मुताबिक 14 जून 1856 ईसवी, को बरेली में पैदा हुए आप ने इल्में दीन अपने वालिद मौलाना नकी अली खॉ और दुसरे उस्तादों से हासिल किया जिनमें शाह आले रसूल मारहरवी, मौलाना अब्दुल अली रामपूर, शाह अबूल हसन अहमद नूरी, और मिर्ज़ा गुलाम कादर बेग वगैरा काबिले ज़िक्र हैं। आला हज़रत को 71 उलूम व फ़ुनून में महारत हासिल थी।

आला हज़रत 1286 हिजरी में आलिमे दीन व मुफ़्ती हो कर फ़ारिग हुए उस वक्त आप की उम्र 13 साल दस माह और 5 दिन की थी।

पहली किताब 8 साल की उम्र में लिखी उसके बाद ता उम्र येह सिलसिला जारी रहा इस तरह तकरीबन 1300 किताबें आप ने अपनी याद गार में छोड़ी हैं।

आला हज़रत ने जिन उलमा से सनदे हदीस व फ़िकह हासिल की उनमें से चन्द के नाम येह हैं।

* हज़रत अल्लामा सैय्यद अहमद ज़ैनी व हलान शाफ़अई मक्की
(विसाल 1299 हिजरी)
* हज़रत शेख अब्दुल रहमान सिराज मुफ़्तीयुल एहनाफ़
(विसाल 1301 हिजरी)
* हज़रत शेख हुसैन बिन सालेह जमलुल लैल मक्की
(विसाल 1302 हिजरी)

आला हज़रत का सिलसिलए हदीस इन बुजुर्गो तक पहुँचता हैं ।

★ हज़रत शाह वली अल्लाह मोहद्दीस दहलवी (विसाल 1176 हिजरी)

★ मौलाना अब्दुल अली लखनवी (विसाल 1235 हिजरी)

★ शेख आबेदुल सिंदी मदनी (विसाल 1257 हिजरी)

आला हज़रत 1294 हिजरी में शाह आले रसूल मारहरवी قدس سرہ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सिलसिलए क़ादरिया में बैत हुए । आला हज़रत को तकरीबन 13 सिलसिलो में खिलाफ़त व इजाज़त हासिल थी । 1295 हिजरी में अपने वालिद के साथ हज्जे बैतुल्लाह शरीफ़ के लिये हाज़िर हुए तो वहाँ इमामे शाफ़िआ मस्जिदे हराम, शेख हूसैन सालेह जमलुल लैल की फ़रमाइश पर उनकी किताब الجوہرۃ المضیئۃ का उर्दू में तरजमा किया ।

दूसरी मरतबा 1323 हिजरी में हाज़िर हुए उलमाए हरमैन तय्यबैन (मक्का व मदीने के उलमा) ने बड़ा एहतेराम किया और आपसे हदीस व फ़िकह की इजाज़त हासिल की उसी दौरन हिन्दुस्तान के कुछ वाहाबी, देवबन्दी, उलमा जो वहॉ हज के लिये आए थे उन्होंने हुज़ूर के इल्मे गैब का इन्कार किया और उस मस्अले पर खूब धान्दलियाँ मचाई और अला हज़रत के खिलाफ़ बादशाह और वहॉ के उलमा को भड़काने की कोशिश की उसके जवाब में आपने सिर्फ 8 घंटे में 400 सफ़ो कि अरबी में الدولۃ المکیۃ بالمادۃ الغیبیۃ नामी किताब लिखी (यह किताब आज आसानी से मिल सकती है) ।

आला हज़रत इत्तेहाद के ज़बरदस्त हामी और ख़्वाहिश मंद थे । जब इस्लाम के दुश्मनों ने फ़ूट ड़ाल कर कौम को टुकड़ो में तक्सीम करना शुरू किया, जब इस्लामी कारवॉ लुट रहा था आला हज़रत लुटेरों का पिछा कर रहे थे और लोगों के दामन खींच खींच कर बुला रहे थे ।

सीधे रास्ते से हट कर नयी नयी राहे बनाने वालो का पीछा कर रहे थे ।

आला हज़रत हर बिदअती और बद अक़ीदा को काफ़िर व मुशरिक से ज़्यादा खतरनाक समझते थे इसीलिए ज़िन्दगी भर अहले सुन्नत व जमात के अक़ाएद की हिफ़ाज़त करते रहे और अपने कलमी जिहाद से तौहीद व रिसालत के पैगाम को आम कर दिया ।

ज़ेरे नज़र किताब بدر الانوار فی آداب الآثار -------- तबर्रूक़ात के मुताल्लिक आप के चंद फ़तवो का मजमूअ़ था । येह फ़तवे अलग अलग वक़्तों में दिये गये थे और बहुत सी अरबी व फ़ारसी इबारतों के तरजमे भी नहीं थे इस वजह से येह क़िताब अव्वाम की समझ से दूर थी । इसे आसान ढंग से तरतीब देने की ज़रूरत थी ताके अव्वाम भी इससे फ़ायदा हासिल कर सके चुनानचा हज़रत मौलाना मुबारक हुसैन मिसबाही साहब क़िबला, ने येह कारे खैर अन्जाम दिया । नाचीज़ ने इसका हिन्दी तरजमा किया हैं और बाज़ ऐसी बहेसे जिनका समझना अव्वाम के लिये मुश्किल है उसे नक्ल करने से परहेज़ किया है ताके किताब की दिलचस्पी कायम रहे । और अव्वाम इसे आसानी से समंझ ले अगर कुछ ख़ामी रह गयी हो तो इस के मुतअल्लिक हमें ज़रूर बताए ताकि अगले एड़िश्न में दुरूस्त की जा सके याद रहे चुकी अरबी व फ़ारसी इबारतों के तरजमे आला हज़रत ने नहीं किया है लिहाज़ा ख़ामियों को नाचीज़ की तरफ़ ही मनसूब किया जाए इससे आला हज़रत का कलम पाक हैं ।

इस किताब में आला हज़रत ने अम्बिया, सहाबा व बुज़ुर्गादीन के तबर्रूकात के मुतअल्लिक कतार दर कतार दलीलों की रोशनी में येह साबित किया हैं के तबर्रूकात रखना, उसकी ज़ियारत करना उसका ऐहतेराम करना, और उससे बरकत हासिल करना बेशक जाइज़ हैं । और हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के ज़मानए ज़ाहिरी से आज तक इस पर अइम्माए दीन उलमा व मशाएख़ का अमल रहा हैं जिसका इन्क़ार बदृदीन बे अक्ल ही कर सकता है ।

मौला तआला अपने हबीब के सदके में हमें सुन्नियत पर कायम रखे

और हमारी इस अदना सी कोशिश को क़ुबूल फ़रमाये और हमें आमाले ख़ैर और ख़िदमते दीन की तौफ़ीक अता फ़रमायें ।

! आमीन !-

तालिबे दुआ,
सगे रज़ा
नाचीज़
मुहम्मद फ़ारूक खाँ अशरफ़ी रिज़वी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तबर्रूकात के आदाब व फ़ज़ाएल

(पहली) (आयत) :- अल्लाह — عَزَّوَجَلَّ — फ़रमाता है ------

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِىْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۔

तरजमा :- बेशक सब में पहला घर के लोगों के लिए मुकर्रर फ़रमाया गया है। वोह है जो मक्का में बरकत वाला और सारे जहाँ को राह दिखाता, इसमें खुली निशानियाँ है। इब्राहीम के खड़े होने का पत्थर जिसपर खड़े हो कर उन्होनें काबाए मोअज़्ज़मा बनाया, उनके कदमें पाक का निशान इसमें बन गया। (सूरए आले इमरान, आयत 96,97)

(1) अजल-ए-मोहद्देसीन अब्द बिन हमीद व इब्ने जरीर व इब्ने अलमन्ज़र व इब्ने अबी हातिम व अरज़की ने इमामे अजल मुजाहिद जो शार्गिद है हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास — رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ — के से इस आयते करीमा की तफसीर में रिवायत कि ---------------
قال اثر قدميه فى المقام آية بينة यानी फ़रमाया के सैय्यदना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दोनों कदमें पाक का इस पत्थर में निशान हो जाना येह खुली निशानी है। जिसे अल्लाह — عَزَّوَجَلَّ — आयते बैय्यनात फ़रमा रहा है।

(2) तफ़सीरे कबीर में हैं -------

तरजमा :- यानी काबाए मोअज़्ज़मा की एक फ़ज़ि‍लत मकामे इब्राहीम है । येह वोह पत्थर है जिस पर इब्राहीम—عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ—ने अपना कदमें मुबारक रखा तो जितना टुकड़ा उनके क़दम के नीचे आया गीली मिट्टी की तरह नर्म हो गया यहाँ तक के इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَامُ का क़दमे मुबारक उसमें तैर गया और येह ख़ासियत कुदरते इलाहीया व मोजेज़हे अम्बिया है । फिर जब इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ—وَالسَّلَامُ ने क़दम उठाया अल्लाह तआला ने दो बारा इस टुकड़े में पत्थर की सख़्ती पैदा कर दी कि वोह क़दम का निशान महफ़ूज़ रह गया । फिर इसे हक सुबहानहु (अल्लाह तआला) ने बरसों बाकी रखा तो येह किस्म किस्म के अजीबो गरीब मोजज़े हैं के अल्लाह तआला ने इस पत्थर में ज़ाहिर फ़रमाए ।

3 "इरशादूल अकलूल" सलीम में हैं -------

ان كل واحد من اثر قدميه في صخرة صماء وغوصه فيها الى الكعبين والانة بعض دون بعض، وابقائه دون سائر آيات الانبياء عليه الصلوٰة والسلام، وحفظه مع كثرة الاعداء الوف سنة آية مستقلة۔

तरजमा :- यानी इसी एक पत्थर को मौला तआला ने बहुत सी आयतें फ़रमाया । इसलिए के (i) इसमें इब्राहीम—عَلَيْهِ السَّلَامُ——— का निशाने क़दम हो जाना । (ii) उनके क़दमों का गट्टो तक इसमें तैर जाना, (iii) और पत्थर का एक टुकड़ा नर्म हो जाना बाकी का अपने हाल पर रहना (iv) पहले अम्बिया-ए-किराम عليهم الصلوٰة والسلام—में इस मोजेज़े का बाकी रख़ना (v) हज़ारो दुश्मनों के होते हुए हज़ारो बरस इसका मेहफ़ुज़ रहना । येह हर एक बजाए ख़ूद एक आयत व मोजेज़ा है ।

(दूसरी) (आयत) :- मौला सुबहानहु तआला फ़रमाता हैं । قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ أَنْ يَّأْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

तरजमा :- बनी इसराईल के नबी शुमवील —عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام— ने उनसे फ़रमाया के सलतनते तालूत की निशानी येह हैं के आए तुम्हारे पास ताबूत (संदूक) जिसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से सकीना है और मूसा व हारून के छोड़े हुए तबर्रूकात हैं। फ़रिश्ते उसे उठाकर लाए बेशक इसमें तुम्हारे लिए अज़ीम निशानी है अगर तुम ईमान रख़ते हो। (सूरए बक्र आयत 248)

फायदा :- वो तबर्रूकात क्या थे मूसा —عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام— का असा (लाठी), उनकी नालैन (जुतियाँ) मुबारक़ और हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام —— का इमामा मुकद्दसा वगैरा। इनकी बरकते थी के बनी इसराईल इस ताबूत (संदूक) को जिस लड़ाई में आगे करते फ़तह पाते, और जिस मुराद में उसके वसीले से माँगते कामयाबी पाते।

(1) इब्ने जरीर व इब्ने अबी हातिम हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास —رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا— से रिवायत फ़रमाते हैं।

"وبقية مما ترك آل موسیٰ عصاه ورضاض الالواح"

तरजमा :- ताबूते सकीना में मूसा —عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام— के तबर्रूकात से उनका असा था और तख़्तियों की पट्टीयाँ (यह पट्टीयाँ तौरेत शरीफ़ की थीं)

(2) वकी बिन जराह व सईद बिन मन्सूर व अब्द बिन हमीद व इब्ने अबी हातिम व अबू सालेह शार्गिद अब्दुल्लाह बिन अब्बास —رضی اللہ تعالیٰ عنہما— से रिवायत करते हैं।

"قال كان في التابوت عصا موسیٰ وعصا هٰرون وثياب موسیٰ وثياب هٰرون ولوحان من التوارة والمن وكلمة الفرج لا إله الا الله الحليم الكريم وسبحان الله رب السمٰوٰت السبع ورب العرش العظيم والحمد لله رب العٰلمين"

तरजमा :- ताबूत में मूसा व हारून —عليهما الصلوٰة والسلام— के असा और दोनों हज़रात के कपड़े और तौरैत की दो तख़्तियाँ और क़दरे मन (एक क़िस्म की गिज़ा) के बनी इसराईल पर उतरा और येह दुआए कशाइश لا اله الا الله الحليم الكريم الخ"

(3) "मुआलेमुल तनज़ील" में है ।

"كان فيه عصا موسىٰ ونعلاه وعمامة هارون وعصاه الخ

तरजमा :- ताबूत में मूसा —عليه الصلوٰة والسلام— का असा और उनकी नालैन (जुतियाँ) मुबारक और हारून عليه الصلوٰة والسلام का इमामा व असा था ।

पहली हदीस :- सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में अनस ——رضى الله عنه— से मरवी है --------

"ان النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم دعا بالحلاق وناول الحالق شقه الايمن فحلقه ثم دعا ابا طلحة الانصارى فاعطاه اياه ثم ناول الشق الايسر فقال احلق فحلقه فاعطاه ابا طلحة فقال اقسمه بين الناس"

तरजमा :- यानी नबी-ए-क़रीम —صلى الله عليه وسلم— ने हज्जाम को बुलाकर दाहिनी जानिब के बाल मुंड़ने का हुक्म फ़रमाया । फिर अबू तलहा अन्सारी —رضى الله تعالىٰ عنه— को बुलाकर वोह सब बाल उन्हें अता फ़रमा दिये । फिर बाऐं जानिब के बालों को मुंड़ने का हुक्म फ़रमाया और वो भी अबू तलहा को दिये के उन्हें लोगों में तकसीम कर दो ।

दूसरी हदीस :- सही बुख़ारी शरीफ़[1] "كتاب اللباس" में ईसा बिन तहेमान से है -------

"قال اخرج الينا انس بن مالك رضى الله عنه نعلين لهما قبالان فقال ثابت البنانى هٰذا نعل النبى صلى الله عليه وسلم"

तरजमा :- हज़रत अनस बिन मालिक —رضى الله عنه— दो नालैन

[1] बुख़ारी शरीफ़, हदीस नं. 804 जिल्द नं. 3 सफा नं. 308 फारूक

(जुतियाँ) मुबारक हमारे पास लाए के हर एक में गिठान के दो बंद थे उनके शागीर्दे रशीद साबित बनानी ने कहा, येह रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की नालैन (जुतियाँ) मुकद्दस है ।

तिसरी हदीस :- सहहीहैन में अबू बुरदा से मरवी है -----

" قال اخرجت الينا عائشه رضى الله عنها كساء ملبدًا وازارًا غليظا. فقالت قبض روح رسول الله صلى الله عليه وسلم فى هذين".

तरजमा :- उम्मुलमोमेनीन आएशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہا ने एक रज़ाई या कंबल और एक मोटा तहेबंद (लुंगी) निक़ाल कर हमें दिखाया और फ़रमाया के विसाल के वक्त हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم के पास येह दो कपड़े थे । (बुखारी शरीफ़, जिल्द 3 हदीस नं. 763)

चौथी हदीस :- सही मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत असमा बिन अबीबकर सिद्दीक رضی اللہ تعالیٰ عنہا से है ।

" انها اخرجت جبة طيالسي كسروانية لها لبنة ديباج وفرجيها مكفوفين بالديباج وقالت هذه جبة رسول الله صلى الله عليه وسلم كانت عند عائشة فلما قبضت قبضتها وكان النبى صلى الله عليه وسلم يلبسها. فنحن نغلسها للمرضى نستشفى بها.

तरजमा :- उन्होंने एक ऊनी जुब्बा कसरवानी (इरानी जुब्बा) निकाला उसकी पीलेट रेशमी थी और दोनों चाको पर रेशम का काम था । और कहाँ येह रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم का जुब्बा है । उम्मुलमोमेनीन आएशा सिद्दीका رضی اللہ عنہا के पास था । उनके इन्तेकाल के बाद मैंने ले लिया नबी صلی اللہ علیہ وسلم इसे पहेना करते थे । तो हम इसे धो धो कर मरीज़ो (बीमारो) को पिलाते और इससे शिफ़ा चाहते है । (मुस्लिम शरीफ़ जिल्द 2, सफ़ा 190)

पाँचवी हदीस - सही बुखारी शरीफ़ में उस्मान बिन अब्दुल्ला बिन मवाहिब से है ।

" قال دخلت على ام سلمة فاخرجت الينا شعرًا من شعر النبی صلی اللہ علیہ وسلم مخضوبًا"۔

तरजमा :- मैं हज़रत उम्मुलमोमेनीन उम्मे सलमा–رضی اللہ تعالیٰ عنہا– की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उन्होंने हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم के मूए मुबारक (दाढ़ी शरीफ़ के बाल) की हमें ज़ियारत कराई उसपर खेज़ाब का असर था। [1]

येह चन्द अहादीस सहहीहैन (बुख़ारी, मुस्लिम,——————————————) से लिख दी और यहाँ अहादीस में बहुत सारे सुबूत और अकवाले अइम्मा (इमामो की बहुत सी बातों) का लगातार सुबूत हैं और मस्अला ख़ूद वज़ेह व ज़ाहिर है और इसका इन्कार जहालत और फुज़ूल है लिहाज़ा सिर्फ़ एक इबारत "शिफ़ा शरीफ़" की काफ़ी है। फ़रमाते हैं ---------

ومن اعظامه واکبارہ صلی اللہ علیہ وسلم اعظام جمیع اسبابه ومالمسه او عرف به وکانت فی قلنسوۃ خالد بن الولید رضی اللہ عنه شعرات من شعرہ صلی اللہ علیہ وسلم فسقطت قلنسوته فی بعض حربه فشد علیها شدۃ انکر علیه اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم کثرۃ من قتل فیها فقال لم افعلها بسبب القلنسوۃ بل لما تضمنته من شعرہ صلی اللہ علیہ وسلم لئلا تسلب برکتها وتقع فی ایدی المشرکین ورأی ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنهما واضعًا یدہ علی مقعد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من المنبر ثم وضعها علی وجهه۔

तरजमा :- यानी رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم की ताज़ीम का एक हिस्सा येह भी है के जिस चीज़ को हुज़ूर से कुछ तअल्लुक हो, हुज़ूर की तरफ़ मन्सूब हो (यानी हुज़ूर से पहेचानी जाती हो) हुज़ूर ने उसे छूआ हो या हुज़ूर के नामे पाक से पहेचानी जाती हो। इन सब की ताज़ीम की जाऐ। हज़रत खालिद बिन वलीद رضی اللہ عنہ की टोपी में चंद

1 ص बुखारी शरीफ जिल्द 3, हर्दीस नं. 841 ! फारूक !

मूए मुबारक़ (यानी हुज़ूर के दाढ़ी शरीफ़ के चन्द बाल) थे। किसी लड़ाई में वोह टोपी गिर गयी खालिद رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने उसके लिए ऐसा शदीद हमला फ़रमाया जिस पर और सहाबा-ए-किराम ने इन्कार किया इसलिऐ के इस शदीद व सख़्त हमले में बहुत मुसलमान शहीद हुऐ खालिद—رضی اللہ عنہ—ने फ़रमाया मेरा येह हमला टोपी के लिए न था बल्के हुज़ूर के मुए मुबारक के लिए था। के कही इसकी बरकत मेरे पास न रहे और वोह काफ़िरो के हाथ लगे![1]

और इब्ने उमर رضی اللہ عنہ को देखा गया के सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم के मिम्बरे अतहर में जो जगह हुज़ूर के बैठने की थी उसे हाथ से मस (मल) करके वोह हाथ अपने मुँह पर फेर लिया करते थे।[2]

बुज़ुर्गो के तबर्रूकात की बरकत से इन्कार चमकते हुए सूरज का इन्कार है इसके साथ के हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم के तबर्रूकाते शरीफ़ा से बरकत का होना साबित है। और पूरी तरह ज़ाहिर है के उलमा हुज़ूर के वारिस हैं तो उनके तबर्रूकात में बरकत क्यों न होंगी फ़कीर—غفر اللہ تعالیٰ—अतमामे हुज्ज़त (इस मस्अले को आख़िर तक समझाने) के लिए चन्द इबारते अइम्मा व उलमा (के वो सब आज से सौ बरस पहले और कुछ पांच सौ - छे सौ बरस पहले के थे) हाज़िर करता है। किताबे मतबुअ का निशान जिल्द व सफ़ा भी ज़ाहिर कर दिया जाएगा ताके हवाला देखने में आसानी हो।

सही मुस्लिम शरीफ में इतबान बिन मालिक—رضی اللہ عنہ—की हदीस है--------

"ان احب ان تاتینی وتصلّی فی منزلی فاتخذہ مصلّی"

तरजमा :- मेरी ख़्वाहिश है के आप मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए और मेरे

---

1 शिफ़ा शरीफ़, जिल्द 2, सफा नं. 110
2 शिफ़ा शरीफ़, जिल्द 2, सफा नं. 149

फारूक !

घर नमाज़ अदा फ़रमाए ताकि मैं उसे नमाज़ की जगह बना लूँ ! [1]

इमामे अजल अबू ज़करया नववी (विलादत 631 हिजरी, वफ़ात 677 हिजरी) इस हदीस के तहेत अपनी "शरहे मुस्लिम शरीफ़" में फ़रमाते हैं ----------

فی ھذا الحدیث انواع من العلم۔ ففیہ التبرک بآثار الصالحین وفیہ زیارۃ العلماء والفضلاء والکبراء واتباعھم وتبریکھم ایاھم۔ (ص۴۷ جلد ۱)

तरजमा :- इस हदीस से चंद चीज़ो का इल्म हुआ इनमें से येह भी हैं के नेक़ लोगों की छोड़ी हुई चीज़ो से बरक़त हासिल की जाए इसी तरह से इससे अहले इल्म व फ़ज़्ल और बुज़ुर्गों का अपने चाहने वालो व पैरवी करने वालो की मुलाकात के लिये जाना और उन्हें अपनी बरक़तो से नवाज़ना भी साबित होता है । (सफ़ा नं. 47 जिल्द 1)

इसी हदीस के नीचे लिखते हैं ----------

فی حدیث عتبان ھذا فوائد کثیرہ، منھا التبرک بالصالحین وآثارھم والصلوٰۃ فی المواضع التی صلوا بھا وطلب التبریک منھم۔ (جلد ۱ صفحہ: ۲۳۳)

तरजमा :- हज़रते इतबान—رضی اللہ عنہ—की हदीस में बहुत से फ़ायदे हैं । जिनमें से चंद येह हैं ।

---

1 महमुद बिन रबेअ अन्सारी से रिवायत हैं के इतबान बिन मालिक-رضی اللہ عنہ- हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के पास आए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! मेरी ऑखें कमज़ोर है और मैं अपनी कौम को नमाज़ पढ़ाता हूँ जब बारिश होती है और नाले बह निकलते है जो मेरे और उनके दरमियान है तो मैं उनकी मस्जिद में नहीं जा सकता । या रसूलल्लाह मेरी ख्वाहिश हैं के आप मेरे यहॉ तशरीफ़ लाए और मेरे घर में नज़ाम पढ़े ताके मैं उस जगह को नमाज़ की जगह बना लूं । इतबान कहते हैं के रसूलल्लाह, हज़रत अबूबक्र के साथ तशरीफ़ लाये और - - - आप ने मेरे घर के एक गोशे में नमाज़ पढ़ी ।
(बुखारी शरीफ़, जिल्द 1 सफ़ा नं. 238) फ़ारूक़ !

منها التبرك بالصالحين واٰثارهم والصلوٰة فی المواضع التی صلوا بها
وطلب التبريك منهم
(جلد ۱ صفحہ ۲۳۳)

(1) सालेहीन (बुज़ुर्गानेदीन) से बरक़त हासिल करना ।

(2) उनके तबर्रूकात से बरक़त लेना ।

(3) जिन मकामात पर उन्होंने नमाज़ अदा की हो वहीं नमाज़ अदा करना ।

(4) उनसे येह दरख़ास्त करना के हमें अपनी बरक़त से नवाज़े ।

(जिल्द नं. 1 सफा 233)

हज़रत अबू हुजैफ़ा رضی اللہ عنہ की हदीस है ।

فخرج بلال بوضوئه فمن نائل وناضح

तरजमा :- हज़रत बिलाल सरकार के वज़ू का पानी लेकर निक़ले तो कोई उस पानी को ले रहा है कोई दूसरे से तरी हासिल करके मल रहा है ।

"शरहे मुस्लिम" में इस हदीस के तहेत फ़रमाया --------

فيه التبرك باٰثار الصالحين واستعمال فضل طهورهم وطعامهم وشرابهم ولباسهم . (جلد نمبر ۱ صفحہ ۱۹۶)

तरजमा :- इसमें बुज़ुगनिदीन के तबर्रूकात से बरकत हासिल करने और उनके वज़ू व गुस्ल से बचे हुए पानी और उनके खाने पीने और लिबास के बचे हुए हिस्से के इस्तेमाल के सिलसिले में दलील है ।

(जिल्द नं. 1 सफा नं. 196)

---

1 हज़रत अबू हुज़ैफा رضی اللہ عنہ से रिवायत हैं, मैंने रसूलुल्ला صلی اللہ علیہ وسلم को चमड़े के एक सुर्ख़ (लाल) ख़ैमे में देखा - - हज़रत बिलाल हुज़ूर के वज़ू से बचा हुआ पानी ले आए और लोगों को देखा के वोह आप के वज़ू का बचा हुआ पानी हाथों हाथ ले रहे है चुनानचे जिसको मिल जाता वोह उसे मुहँ पर मल लेता और जिसे न मिलता वोह अपने साथ वाले से तरी ले लेता ।
(बुखारी शरीफ़, जिल्द 1 सफा 225)

फ़ारूक

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ की हदीस है ।

" مایوتیٰ باناء الا غمس یدہ فیہ "

तरजमा :- (हुज़ूर के पास) जो भी बरतन हाज़िर किया जाता उसमें दस्ते मुबारक (हाथ) डूबो देते ।[1]

इस हदीस के तहेत "शारहे मुस्लिम" फ़रमाते हैं ।

فیہ التبرک باثار الصالحین۔ (جلد نمبر ۲ ص۲۵۶)

तरजमा :- इसमें नेकों के तबर्रुकात से बरकत हासिल करने पर दलील है। (जिल्द नं. 2 सफा नं 256)

हज़रत अबू अय्यूब رضی اللہ تعالیٰ عنہ की हदीस है ।

" اکل منہ وبعث بفضلہ الیّ "

तरजमा :- (हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने खाने में से) कुछ तनाविल फ़रमाया और बाकी बचा हुआ मेरी जानिब भेज दिया

इस हदीस के तहेत "शरहे मुस्लिम शरीफ़" में है ।

قال العلماء فی ھذہ انہ یستحب للآکل والشارب ان یفضل مما یاکل ویشرب فضلۃ لیواسی بہا من بعدہ لا سیما ان کان ممن یتبرک بفضلہ۔ (جلد نمبر ۲ ص۱۸۳)

तरजमा :- इसमें उलमा ने फ़रमाया - - - - खाने और पीने वाले के लिये बेहतर येह हैं के उसके खाने पीने की चीज़ से कुछ बचा रहे ताके उसके ज़रीये अपने बाद वालो को फ़ायेदा मिल सके । खास कर अगर येह ऐसे हज़रात में से हो जिनके बचे हुए खाने पीने से लोग बरकत हासिल करते हो । (जिल्द नं. 2 सफा नं. 183)

---

1 हज़रत अनस बिन मालिक —رضی اللہ عنہ— से रिवायत हैं रसूलुल्लाह —— صلی اللہ علیہ وسلم— जब फज्र कि नमाज़ पढ़ लेते तो मदीना तय्यबा के बच्चे अपने अपने बर्तन में पानी भर कर आपके पास लाते और आप हर बर्तन में अपना दस्ते मुबारक (हाथ मुबारक) डूबो देते कभी कभी सख़्त सर्दी में भी फज्र के वक्त बच्चे आते तब भी आप उनके बर्तनों में अपना दस्ते मुबारक डूबो देते
(सही मुस्लिम शरीफ, जिल्द 2, सफा नं. 256) फारूक !

"मुस्लिम शरीफ़" में हदीस है ।

"سأل عن موضع اصابعه فتتبع موضع اصابعه"

तरजमा :- पहले येह दरयाफ़्त फ़रमाते के सरकार ने कहाँ से उँगलियाँ रख कर खाना तनाविल फ़रमाया है फिर खास उसी जगह से उठाते ।

इस हदीस के तेहत "शरहे मुस्लिम" में है ।

فيه التبرك بآثار الخير في الطعام وغيره (جلد ۲ ص۱۸۳)

तरजमा :- इसमें खाने वगैरा में बुज़ुर्ग हसती के तबर्रूकात से बरकत हासिल करने का सुबूत है ।

इमाम अहमद बिन मुहम्मद क़ुस्तलानी (जिनका इन्तेकाल 923 हिजरी में हुआ)

"इरशादुल सारी शरहे सही बुखारी" में हदीस (तो लोग सरकार के वज़ू का बचा हुआ पानी लेकर जिस्म पर मलने लगे) इस हदीस के मुतअल्लिक फ़रमाते है --------

"استنبط منه التبرك لما يلامس اجساد الصالحين."

तरजमा :- इस हदीस से नेक लोगों के जिस्म से मस (छुने) वाली चीज़ो से बरकत हासिल करने का इज़हार है । (जिल्द नं. 1, सफा 381)

बुखारी शरीफ़ की हदीस है --------

"انى والله ما سألته لالبسها انما سألته لتكون كفنى"

तरजमा :- ब ख़ुदा मैंने पहेनने के लिए सरकार से इसको नहीं मांगा है मैंने तो सिर्फ़ इसलिए तलब किया हैं के येह मेरा कफ़न हो जाए [1]

---

1 हज़रत सहेल رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं के एक औरत रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत में बुनी हुई एक चादर लेकर आई - - - - - और अर्ज़ किया येह चादर मैंने बुनी है और पहेन्ने के लिये आपकी ख़िदमत में पेश कर रही हूँ हुज़ूर ने उसे ले लिया और आपको ज़रूरत भी थी आप उसी का तेहबंद (लुंगी)बांध कर बाहर तशरीफ़ लाए किसी साहाबी ने उसकी तारीफ़ की और कहाँ येह मुझे इनायत हो जाये येह किस कदर अच्छी है । (बाकी हाशिया सफा नं. १९ पर)

इस हदीस के तहेत "इरशादुल सारी" में है --------

فیہ التبرک بآثار الصالحین قال اصحابنا لا یندب ان یعد لنفسہ کفنًا الا ان یکون من اثر ذی صلاح فحسن اعدادہ کما ھنا:

انتہی ملخصًا۔ (جلد نمبر ۲ صفحہ ۳۲۴)

तरजमा :- इसमें बुज़ुर्गों की छोड़ी हुई चीज़ों से बरकत हासिल करने का सुबूत है। हमारे उलमा ने फ़रमाया के येह बेहतर नहीं के इन्सान अपने लिये कोई कफ़न तयार कराए मगर किसी नेक बुज़ुर्ग की यादगार हो तो उसे कफ़न के लिये रख लेना अच्छा हैं जैसा यहाँ है।

(जिल्द नं. 2 सफा नं. 324)

मौलाना अली कारी मक्की (जिनका इन्तेक़ाल 1014 हिजरी में हुआ) "सुनन नसाई" की हदीस के, हज़रत तलक बिन अली رضی اللہ تعالیٰ عنہ हुज़ूर सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم के वज़ू का बचा हुआ पानी हुज़ूर से माँग कर अपने मुल्क ले गये। "मिरकात शरहे मिश्कात" में इस हदीस को बयान करके नीचे येह फ़ायदा लिखा।

فیہ التبرک بفضلہ صلی اللہ علیہ وسلم و نقلہ الی البلاد نظیر ماء زمزم۔ و یؤخذ من ذالک ان فضلۃ وارثیہ من العلماء والصلحاء کذالک۔

तरजमा :- इससे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के वज़ू

(बाकी सफा नं. *18* का) लोगों ने कहाँ तुमने अच्छा नहीं किया इसे हुज़ूर ने ज़रूरत के लिये पहेना था और तुम हुज़ूर से मांग बैठे हालाँके तुम्हें मालूम हैं के आप किसी का सवाल रद नहीं फ़रमातें। उस सहाबी ने कहाँ ब ख़ुदा मैंने इसे पैहनने के लिये नहीं मांगा है बल्की कफ़न बनाने के लिये माँगा है (इस रिवायत के रावी) हज़रत सहेल कहते है वोह चादर उस साहबी के लिये बतौरे कफ़न इस्तेमाल हुई।

(बुखारी शर्रीफ़, जिल्द 1 सफ़ा नं 491) फारूक !

के बचे हुए पानी से बरकत हासिल करना और उसे आबे ज़मज़म की तरह अपने मुल्क व शहर में ले जाना साबित हुआ । और इससे

येह भी मालूम हुआ के आपके वारेसीन उलमा व बुज़ुर्गों का वज़ू से बचा हुआ पानी भी यही हुक्म रखता है ।

मौलाना शेख अब्दुल हक मोहद्दीस दहेलवी (जिनका इन्तेकाल 1052 हिजरी में हुआ) ने इस हदीस के तहेत "अशअतुल लिम्आत" में फ़रमाया --------

"دریں حدیث استحباب تبرک است بہ بقیہ آب وضوئے و
پسماندۂ آنحضرت ونقل آں ببلاد و مواضع بعیدہ مانند آب زمزم
وآنحضرت چوں در مدینہ می بود آب زم زم را از حاکم مکہ می
طلبید و تبرک می ساخت۔ وفضلہ وارثان او کہ علماء و صلحاء
اند و تبرک بآثار و انوار ایشاں ہم بریں قیاس است۔" (ص ۱۴۱ ج ۱)

तरजमा :- इस हदीस में हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के बचे हुए पानी से बरकते हासिल करने का सुबूत है और आबे ज़मज़म की तरह इस का दूर दराज़ शहरो और मकामात में लेजाना साबित हुआ और हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم — जब मदीना शरीफ़ में रहते थे तो मक्का के हाकिम से आबे ज़मज़म बुलवाते और उसे तबर्रूक बनाते और हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم — के वारिस उलमा और सालेहा का बचा हुआ पानी और उनके तबर्रूकात व अनवार से बरकत हासिल करना भी इसी तरह है ।

शेख मोहकिक दहेलवी के ही ज़माने के आलिम इमाम अल्लामा अहमद बिन मुहम्मद मिसरी मालकी ने मशहूर किताब "فتح المتعال فی مدح خیر النعال" में इमामे अजल खातमतुल मुजतहेदीन अबूल हसन अली बिन अब्दुल काफ़ी सूबकी शाफ़अई (जिनका इन्तेकाल 756 हिजरी में हुआ) उनका एक कलामे नफ़ीस तबर्रूक और इमाम शेखुल इस्लाम अबू ज़करया नववी قدست اسرارہم के छोड़े हुए तबर्रूकात

के बारे मे नक़्ल फ़रमाया है जो इस तरह से हैं ।

حكى جماعة من الشافعية ان الشيخ العلامه تقى الدين ابا الحسن عليا السبكى الشافعى لما تولى تدريس دار الحديث بالاشرفية بالشام بعد وفاة الامام النووى احد من يفتخر به المسلمون خصوصا الشافعيا انشد لنفسه ۔

ع " وفى دار الحديث لطيف معنى
الى بسط لها اصبو و آوى
لعلى ان امس بحر وجهى
مكانا مسه قدم النواوى "

तरजमा :- शाफ़अई हज़रात की एक जमाअ़त ने ब़यान किया के मुसलमानों और ख़ासतौर पर शाफ़अईयों की काबिले फख्र शख़्सियत इमाम नववी के इन्तेकाल के बाद हज़रत अल्लामा शेख़ तकियुद्दीन अबूलहसन अली सुबकी शाफ़अई, मुल्के शाम में "अशरफिया" के दारूल हदीस के मन्सबे तदरीस पर फ़ाएज़ हुऐ (यानी हदीस पढ़ाने उस मदरसे में तशरीफ़ लाए) तो अपने लिए येह अश्आर पढ़े "दारूल हदीस में कमाल की जानिब एक छुपाहुआ इशारा है। मैं इसका चाहने वाला हूँ और इसे हमेशा के लिए पनाह की जगह बनाने वाला हूँ - उम्मीद हैं के मेरा चेहरा ऐसी जगह से छू जाए जिस से इमाम नववी के क़दम लग चुके हैं ।"

शाहवली अल्लाह देहेलवी (जिनका इन्तेकाल 1174 हिजरी मे हुआ) "फुयूज़ुल हरमैन" सफ़ा 20 में लिखते है --------

من اراد ان يحصل له ما للملأ السافل من الملائكة فلا سبيل الى ذالك الا الاعتصام بالطهارات والحلول بالمساجد القديمة التى صلى فيها جماعات من الاولياء الخ ۔

तरजमा :- जो येह इरादा करे के उसे फ़रिश्तों के तबके की बरकत हासिल हो तो उसका रास्ता येह हैं के तहारतों की ख़ूब पाबंदी करें और उन पुरानी मस्जिदों मे दाख़िल होता रहे जिनमें औलिया की कुछ

जमाअते नमाज़ अदा कर चुकी हो ।

इसी फुयूज़ुल हरमैन सफ़ा 49 पर फ़रमातें हैं -------

ان الانسان اذا صار محبوبًا فكان منظور اللحق وللملأ الا
على عروسًا جميلا، فكل مكان حل فيه انعقدت وتعلقت به همم الملاء
الاعلى، وانساق اليه افواج الملائكة وامواج النور لا سيما۔ اذا كانت
همته تعلقت بهذا المكان۔ والعارف الكامل معرفة وحالا له همة يحل
فيها نظر الحق يتعلق باهله وماله وبيته ونسله ونسبه وقرابته
واصحابه يشمل المال والجاه وغيرها ويصلحها فمن ذالك تميزت مآثر الكمل
من مآثر غيرهم۔

तरजमा :- बेशक इन्सान जब मेहबूब हो जाता है तो साहेबे जमाल दुल्हा बनकर रब्बेजलील और मलाएका मुकर्रबीन (फ़रिश्तों) का मन्ज़ूरे नज़र हो जाता है । वोह जिस जगाह ठेहर जाऐ उससे फ़रिशतों के इरादे वाबस्ता हो जाते है और फ़रिशतों की फ़ौजे और नूर की मौजे उसकी जानिब उतरने लगती है । ख़ास तौर से जब उसे भी उस जगह से ख़ास तअल्लुक हो जाऐ और जो कैफ़ियत व मारेफ़त के एतेबार से आरिफ़ (बुज़ुर्ग) या कामिल हो । और उसके पास ऐसा इरादा होता है जो रब की तवज्जेह का मरकज़ होता है येह तवज्जे उसके अहेल, माल, घर, ख़ानदान, रिशतेदारों और दोस्तों से वाबस्ता और माल व मनसब (ओहदा) वगैरा को भी शामिल होती है । और इनमें इसलाह व दुरूस्ती पैदा कर देती है । तो इस वजह से बुज़ुर्गो की छोड़ी हुई चीज़ें दुसरों की चीज़ों से मुमताज़ (मरतबे वाली) हो जाती है ।

"फुयूज़ुल हरमैन" के सफ़ा नं 57 पर लिखते हैं --------

إن قام المعرفة لروحه تحديق وعناية بكل شئ من طريقه ومذهبه وسلسلته ونسبه وقرابته وكل ما يليه وينسب اليه وعنايته هذه يختلط بها عناية الحق۔

तरजमा :- अगर किसी कों मारेफ़त हासिल हो जाए तो उसकी रूह को येह कुव्वत हासिल होती हैं के तरीक़त, मसलक, नस्ब, कुराबत और उससे निसबत व तअल्लुक रखने वाली सारी चीज़ें उसकी रूह के एतराफ़ और उसकी इनायत व तवज्जेह के दाएरे में आ जाती है और उसकी रूहानी तवज्जेह के साथ इनायते रब्बानी भी मिली हुई होती है ।

"हेमात" में लिखते हैं ---------

ازیں جاست حفظ اعراس مشائخ ومواظبت زیارت
قبور ایشاں والتزام فاتحہ خواندن وصدقہ دادن برائے ایشاں
واعتنائے تمام کردن بہ تعظیم آثار واولاد ومنتسبانِ ایشاں۔

तरजमा :- बुज़ुर्गों के उर्सों की हिफ़ाज़त, उनके मज़ारों की ज़ियारत की पाबंदी, उनके लिए फ़ातेहा पढ़ने और सदका देने का बार बार का अमल और भरपूर तवज्जेह के साथ उनकी औलाद से तअल्लुक और उनके तबर्रूकात की ताज़ीम व इज़्ज़त इसी से मालूम हुई ।

शाहा (वलीअल्लाह) साहब अपनी किताब "अनफ़ासुल आरेफ़ीन" में हज़रत गौसे आज़म की क़लाह (टोपी) मुबारक से मुत्अल्लिक एक वाकेअ नक्ल फ़रमाते हैं ---------

در حرمین شخصے از بزرگان خود کلاہ حضرت غوث الثقلین
تبرک یافتہ بود، شبے در واقعہ حضرت غوث الاعظم را دید کہ می
فرمایند۔ ایں کلاہ بہ ابوالقاسم اکبرآبادی برساں، آں شخص
برائے امتحان یک جبہ قیمتی ہمراہ آں کلاہ کردہ گفت کہ ایں

ہر دو تبرک حضرت غوث الاعظم مستند۔ حکم شد کہ بشمار ساند
حضرت شاں بسیار خوش شدہ گرفتند آں شخص گفت کہ
برائے شکر حصول ایں تبرک اہل شہر را دعوت کنید فرمودند کہ
وقت صبح بیائید۔ مردمانِ بسیار بوقت صبح آمدند و طعامہائے
خوب خوردند و فاتحہ خواندند۔ بعد آں پرسیدند کہ شما مردفقیر
ہستید ایں قدر طعام از کجا آمد، فرمود کہ جبہ را فروختم و تبرک را
نگاہ داشتم۔ ہمہ گفتند کہ للہ الحمد کہ تبرک بمستحق رسید۔

तरजमा :- हरमैन शरीफ़ैन (मक्का-ए-मोअज़्ज़मा) में एक शख़्स ने हज़रत गौसुलसक्लैन (गौसे आज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ) की टोपी मुबारक अपने बुज़ुर्गों से तबर्रूक में पाई। एक रात उसने मुरागबे की हालत में हज़रत गौसुल आज़म को देखा के फ़रमा रहें हैं येह टोपी अबूल कासिम अकबर आबादी के पास पहुँचा दो उस शख़्स ने इमतेहान के तौर पर एक कीमती जुब्बा भी इस टोपी के साथ ले लिया और हज़रत अबूल कासिम अकबर आबादी से कहा, येह दोनों हज़रत गौसुल आज़म के तबर्रूक हैं। हुक्म हुआ है के इन्हें आप तक पहुँचा दूँ उन्होंने बहुत खूश होकर ले लिया। फ़िर उस शख़्स ने कहा इस तबर्रूक के मिलने के शुक्रिया के लिए आप शहर वालों की दावत क़ीजिये अबूल कासिम ने फ़रमाया ठीक है सुबह आइए लोग आए फ़ातेहा पढ़ी और उमदाह खाना खिलाया उसके बाद उन लोगों ने अबूल कासिम से पुछा आप एक फ़कीर इन्सान इतना खाना कहाँ से आया फ़रमाया जुब्बा बेच दिया और तबर्रूक महफूज़ कर लिया। सबने कहा अलहम्दुलिल्लाह, तबर्रूक मुस्तहिक के पास पहुँच गया।

"तबरानी मोअजमे अवसत" और "अबू नईम हुलिया" में हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर फारूके आज़म — رضی اللہ عنہما — से रिवायत फ़रमाते हैं ----------

قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يبعث الى المطاهر فيوتى
بالماء فيشربه يرجوبه بركة ايدى المسلمين۔

यानी हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे आलम—صلی اللہ علیہ وسلم—मुसलमानों की तहारत गाहों जैसे हौज़ वग़ैरा से जहाँ मुसलमान वज़ू किया करते, हुज़ूर वहाँ का पानी मंगाकर नोश फ़रमाते (यानी पीते) और उससे मुसलमानों के हाथों की बरकत लेना चाहते ।

अल्लामा मुहम्मद हनफ़ी "تعلیقات علی الجامع" में फ़रमाते है ।

يرجوبه بركته الخ- لانهم محبوبون لله تعالىٰ بدليل ان الله يحب التوابين ويحب المتطهرين.

यानी हुज़ूरे अक़दस-صلی اللہ علیہ وسلم—मुसलमानों के वज़ूसे बचे हुए पानी में इस वजह से बरक़त की उम्मीद रख़ते के वोह ख़ुदा के मेहबूब लोग है ।

क़ुरआने अज़ीम में फ़रमाया—:—बेशक अल्लाह तआला दोस्त रख़ता है बहुत तोबा करने वालों को और दोस्त रख़ता है तहारत वालों को——اللہ اکبر اللہ اکبر——अल्लाहो अकबर अल्लाहो अकबर

येह हुज़ूर पुरनूर सैय्यदुल मुबारेकीन صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم है।——— जिन की नालैने पाक (जूतियाँ मुबारक) की ख़ाक तमाम जहाँन के लिए तबर्रुक दिल व जान और सर चश्मए दीन व ईमान है, वोह उस पानी को जिस में मुसलमानों के हाथ धुलें तबर्रुक समझे, और उसे मंगाकर बरकत हासिल करने की नियत से नोश फरमाऐं (यानी पीये) हालाँके वल्लाह मुसलमानों के हाथ व ज़बान और दिल व जान में जो बरकतें हैं सब उनहीं ने अता फ़रमाई, उनहीं की नालैने पाक के सदक़े में हाथ आई ।

येह सब उम्मत की तअलीम के लिए और ख़्वाबे गफ़लत में पड़े हुऐ लोगों की नसीहत के लिए था । यूँ न समझे तो अपने मौला व आका صلی اللہ علیہ وسلم-का फ़ेल (अमल) सुनकर बेदार और औलिया व उलमा के तबर्रुकात के तलबगार हो । फिर कैसा जाहिल व मेहरूम व न समझ बेवकूफ हैं के बुज़ुर्गाने दीन की चीज़ों को न जाने और उससे बरकत मिलने को न माने ।

طبقة فطبقة شرقًا، غربًا، عجمًا، عربًا उल्मा-ए-दीन और अइम्मा-ए-दीन नाले मुतहर हुज़ूर सैय्यदुल बशर افضل الصلوٰة واكمل السلام—(यानी हुज़ूर की जूतियाँ मुबारक) के नक्शे कागज़ो पर बनाते किताबों में तहरीर फ़रमातें आए और उनहें बोसा देने, आँखों से लगाने, सर पर रख़ने का हुक्म फ़रमातें रहें और बीमारियों को दूर करने और अपने मक्सद को हासिल करने में उससे वसीला मांगते आए । और अल्लाह के फ़ज़ल से अज़ीम व जलील बरकतें उससे पाते रहें ।

अल्लामा अबूल यमन इब्ने असाकर, और शेख अबू इसहाक इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन खलफ़ सलमी वगैरा उलमा ने इस बारे में ख़ास किताबे लिखीं । और अल्लामा अहमद मक्री की فتح المتعال—في نعال المتعال—इस मस्अले में बेहतरीन और नफ़ा पहुँचाने वाली किताबों से है ।

जिन बुज़ूर्गो ने नक्शे नाले मुकददस (यानी हुज़ूर की जुतियो की तस्वीर) की तारीफें बड़ चड़ कर लिखी उनके नाम इस तरह से हैं ।

1. मोहद्दीस अल्लामा अबूलरबीआ सुलेमान बिन सालम कुलाई
2. काज़ी शमशुद्दीन ज़ोएफुल्लाह रशीदी
3. शेख फ़तहऊल्लाह बैलूनी हल्बी मआस्र अल्लामा मकरी
4. शेख मुहम्मद मूसा हुसैनी मालकी मआस्र अल्लामा मम्दुह
5. शेख मुहम्मद बिन फ़रज सुबती
6. शेख मुहम्मद बिन रशीद फ़हरी सुबती
7. अल्लामा अहमद बिन मुहम्मद तुलमसमानी मौसूफ़
8. अल्लामा अबूल यमन इब्ने असाकर
9. अल्लामा अबूल हकम मालिक बिन अब्दुल रहमान बिन अली मग़रबी
10. इमान अबू बकर अहमद बिन इमाम अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन हुसैन अन्सारी कुरतबी । वगैराहम رحمه الله تعالى عليهم اجمعين.

इन सब में इसे बोसा देने (चुमने) सर पर रखने का हुक्म

और उसके फ़ायदे लिखे हैं । और यही "मवाहिबुल दुनिया" इमाम अल्लामा क़ुसतलानी व "शरहे मवाहिब" अल्लामा ज़रकानी वग़ैरा की अज़ीम किताबों में लिखा हुआ हैं ।

उलमा फ़रमाते हैं "जिसके पास नालैन का नक़्श हो ज़ालीमों के ज़ुल्म से, शरारत करने वाले शैतानो से, और हसद और बुग्ज़ रखने वालो से, मेहफ़ूज़ रहे । हामला औरत दर्द के वक्त अपने दाहिने हाथ में ले तो आसानी हो । जो हमेशा पास रखे वो लोगों की निगाह में इज़्ज़त वाला हो, हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم—के रोज़े मुकद्दस की ज़ियारत नसीब हो, या ख़्वाब में हुज़ूरे अक़दस—صلی اللہ علیہ وسلم—कि ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो, जिस लश्कर में हो पीठ दिखाकर न भागे, जिस काफ़ले में हो वो काफ़ला न लुटे, जिस क़श्ती में हो वो न डूबे, जिस माल में हो वो माल चोरी न हो, जिस हाजत में इससे वसीला किया जाऐ वो हाजत पूरी हो, जिस मुराद की नियत से पास रखे वो मुराद पूरी हो, दर्द की जगह और बिमारी में इसे पास रखकर शिफ़ा मिली हैं, ख़तरनाक जगहो पर मुसीबतों में इसके वसीले से निजात व फ़लाह की राहे खुली है ।

इस बारे में बुज़ुर्गाने दीन और उलमा-ए-क़िराम के वाकेआत और रिवायते बहुत ज़्यादा हैं के इमाम तलस्मानी वगैरा ने "फ़ताहुल मतआल" वगैरा में ज़िक्र फ़रमाई । और بسم اللہ شریف उस पर लिखनें में कुछ हर्ज नहीं ।

अगर येह ख्याल क़ीजिए के नालैन मुक़द्दस खास अहले ईमान का ताज है मगर अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला का नाम व क़लाम हर चीज़ से बुज़ुर्ग व आज़म, बहुत बुलन्द व आला है इस लिये इस पर "बिस्मील्लाह" लिखने से परहेज करना चाहिये तो येह ख़्याल दूसरा हैं

अगर हुज़ूर सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم से अर्ज़ की जाती के अल्लाह के नाम या بسم اللہ شریف हुज़ूर की नालैन मुक़द्दस पर लिखी जाए तो पसंद न फ़रमाते मगर इस क़दर ज़रूरी है के नालैन

मुक़द्दस का इस्तेमाल व तमसाल मेहफ़ुज़, बेक़दरी में फ़र्क, खुली बात, और आमाल का मदार नियत पर है ।

अमीरूलमोमेनीन फ़ारूके आज़म—رضی اللہ عنہ—ने सदके के जानवारो की रानों पर "حبیس فی سبیل اللہ" दाग़ फ़रमाया । हालांके उनकी राने बहुत मौको पर बे एहतियाती में गंदी होती है ।बल्के "सुनन दारमी शरीफ" में है ।

اخبرنا مالك بن اسماعيل ثنا مندل بن علی الغزی حدثنی

جعفر بن ابی المغيرة عن سعيد بن جبير. قال كنت اجلس الی ابن عباس

فاكتب فی الصحيفة حتی تمتلی ثم اقلب نعلی فاكتب فی ظهورهما.

तरजमा :- सईद बिन जुबीर से मरवी हैं उन्होंने कहा के मैं हज़रत इब्ने अब्बास—رضی اللہ عنہ—के पास बैठा और सहीफ़ें (किताब). में लिखता यहॉ तक के वोह भर जाता फिर मैं अपने जूते निक़ालता और उनके उपरी हिस्सो पर लिखता ।

रोज़े मुनव्वरा हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे आलम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की सही नक्ल बेशक अज़मत वाली है इसकी ताज़ीम व इज़्ज़त शरीअत के मुताबिक हर मुसलमान सही ईमान वाले की ख्वाइशे ईमान है ।

ع ——— اے گل بتو خرسندم تو بوئے کسے داری

इसकी ज़ियारत बा आदाबे शरीअत, और उस वक़्त ख़ूब ख़ूब दुरूद शरीफ पढ़ना मोमीन के दिल की शहादत, मुस्तहेब और पसंदीदा है ।

अल्लामा ताज फ़ाकहानी "फ़जरे मुनीर" में फरमाते हैं ------

" من فوائد ذالك ان من لم يمكنه زيارة الروضة فليبرز

مثالها وليلثمه مشتاقًا لانه ناب مناب الاصل كما قد ناب مثال نعله

الشريفة مناب عينها فی المنافع والخواص بشهادة التجربة الصحيحة

ولذا جعلوا له من الاكرام والاحترام ما يجعلون للمنوب عنه.

यानी रोज़ए मुबारक़ सैय्यदे आलम—صلی اللہ علیہ وسلم—की नक़्ल (गुम्बदे खज़रा की तस्वीर) देखने के बहुत फ़ायदे हैं के जिसे हुज़ूर के रोज़े की ज़ियारत न मिले वोह इसकी ज़ियारत करे और शौके दिल के साथ उसे बोसा दे के येह तस्वीर अस्ल रोज़े के क़ायम मक़ाम है (यानी हुज़ूर के रोज़े की तस्वीर हुज़ूर के अस्ल रोज़े के ही तरह है) जैसे हुज़ूर की अस्ल जुतियाँ मुबारक नफ़ा पहुँचाने वाली हैं उसी तरह उसकी नक़्ल (तस्वीर) भी नफ़ा पहुँचाने वाली है जिस पर सही तजुरबा गवाह है लिहाज़ा उलमा-ए-दीन ने उसकी तस्वीर का इज़्ज़त व ऐहतराम में वही मरतबा रख़ा जो अस्ल का रखते हैं ।

अल्लामा ताहीर फ़ितनी "मजमउल बहार" में अपने उस्ताद हज़रत आरिफ़ बिल्लाह सैय्यदी अली मुत्तकी मक्की और वोह अपने उस्ताद इमाम इब्ने हजर मक्की رحمہم اللہ تعالیٰ से नक्ल फ़रमाते है ।

"من استيقظ عند اخذ الطيب وشمه الى ما كان عليه صلى الله عليه وسلم من محبتة للطيب وصلى الله تعالى عليه وسلم لما وترفى قلبه من جلالته واستحقاقه على كل امته ان يعظوا بعين نهاية الاجلال عند روية شيئى من آثاره او ما يدل عليها نهوا ت بماله فيه اكمل الثواب الجزيل وقد استحبه العلماء لمن رأى شيئًا من آثاره صلى الله عليه وسلم۔ ولا شك ان من استحضر وما ذكرته عند شمه للطيب يكون كالرائى بشئى من آثاره الشريفة فى المعنى۔ فليس به الا الاكثار من الصلواة والسلام عليه صلى الله عليه وسلم حينئذ مختصرًا۔

तरजमा :- और जो ख़ूशबू लेते और सूगंते वक़्त इससे बा खबर हो के नबी-ए-करीम صلی اللہ علیہ وسلم इस ख़ूशबू को पसंद फ़रमाते हैं और दिल में तो उनकी इज़्ज़त व अज़मत के पेशे नज़र दुरूदे पाक भेजे और पूरी उम्मत पर नबी का येह हक़ हैं के आप के तबर्रूकात और उनकी रहनुमाई करने वाली चीज़ो की ज़ियारत के वक्त अदब व

ऐहतराम के सबसे बुलन्द तसव्वूर में डूब जाए । तो वोह इसकी वजह से भरपूर सवाब और इनाम के मुस्तहिक होंगे । और जो रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم —— के तबर्रूकात से किसी चीज़ को देखे और बेशक ख़ुशबू सूगंते वक्त रसूलुल्लाह का तसव्वूर करने वाला आप के तबर्रूकात ही से किसी चीज़ के देखने वाले के हुक्म में है । उस वक्त दुरूद शरीफ़ ख़ूब ख़ूब पढ़ने को उलमा ने ज़रूरी और मस्नून बताया है ।

इस खूबसूरत इरशाद में साफ़ साफ़ बताया गया हैं के तमाम उम्मत पर रसूलल्लाह—صلی اللہ علیہ وسلم—का हक़ हैं के जब हुज़ूर पुरनूर مصطفےٰ صلی اللہ علیہ وسلم के तबर्रूकाते शरीफ़ा से कोई चीज़ देखे या वो चीज़ देखे जो हुज़ूर के तबर्रूकात से किसी चीज़ की रहनुमाई करती हो तो उस वक्त कमाल अदब व ताज़ीम के साथ हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे आलम سید عالم صلی اللہ علیہ وسلم का तसव्वूर लाए और दुरूद व सलाम ख़ूब ख़ूब पढ़े लेहाज़ा जो ख़ूशबू लेते या सुगंते वक़्त याद करे के इसे मुस्तफ़ा صلی اللہ علیہ وسلم पसंद फ़रमाते थे तो वोह भी गोया हुज़ूर के तबर्रूकाते शरीफ़ा की ज़ियारत कर रहा है उसे उस वक्त दुरूद पढ़ने की कसरत मसनून होनी चाहिये तो हुज़ूर के रोज़े की नक़्ल (तस्वीर) हुज़ूर के तबर्रूकात की रहनुमाई करने वाली चीज़ो में दाखिल है । इसकी ज़ियारत के वक्त हुज़ूरे अक़दस-صلی اللہ علیہ وسلم—की तअज़ीम व इज़्ज़त और हुज़ूर पर दुरूद व सलाम क्यों न मुस्तहेब होंगा । ऐसी तअज़ीम करने वाले को मआज़ल्लाह कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन की तरह बताना सख़्त नापाक और बेबाक कलमा है । ऐसा कहने वाले जाहिल पर तो येह फ़र्ज़ हैं कि नये सिरे से कल्माए इस्लाम पढ़े और नया निकाह अपनी औरत से दोबारा करे के उसने बिला वजह मुस्लमानों को कुफ़्फ़ार की तरह बताया है ।

रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم —— फ़रमाते हैं ----------

من دعا رجلا بالکفر او قال عدو اللہ ولیس کذالک الا حار علیہ

رواہ الشیخان عن ابی ذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ -

तरजमा :- जिसने क़िसी शख़्स को कलमाऐ कुफ़्र के साथ पुकारा (यानी काफ़ीर कहॉ) या अल्लाह का दुश्मन कहॉ हालाँके वोह ऐसा नहीं है तो उसी की जानिब लौटेगा (यानी कहने वाला खूद काफ़िर हो जाएगा)

अगर रोज़ए मुबारक़ा हज़रत शहेज़ादहे गुलगूँ क़ुबा इमामे हुसैन शहीदे जुल्म व ज़फ़ा صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علی جدہ الکریم وعلیہ की सही नक्ल बना कर सिर्फ़ तबर्रूक की नियत से बगैर किसी ऐसी मिलावट के जो शरीअत में जाइज़ नहीं मक़ान में रख़ते तो शरअन कोई हर्ज न होता (यानी इमामे हुसैन के रोज़े मुबारक की नक्ल अस्ल रोज़े के जैसा बनाकर रखा जाता तो कोई हर्ज न होता)

मगर हरगिज़ नहीं !ताज़ीया हरगिज़ इमामे हुसैन के रोज़े के अस्ल की तरह नहीं उसके जैसा होना तो दूर बनाने वालो को नक़्ल का कस्द (इरादा) भी नहीं । हर जगह नयी तराश नयी घड़त जिसे अस्ल रोज़े से न कुछ तअल्लुक न निसबत, फिर किसी मे पराया, किसी में बुर्राक़, किसी में बेहुदा सजावट । फिर कुचा ब कुचा सड़को पर (नक़ली) गम बताने के लिये उनका गश्त और इसके गिर्द सीनों को ठोकना मातम करना, और चिखंना चिल्लाना हराम़ मरसीयों से रोना पीटना जो अक्ल से दूर और नक्ल से कटा छटा है ।

कोई इन खपचियों (ताज़ीयों) को झुक झुक कर सलाम कर रहा है । तो कोई तवाफ़ में लगा हुआ है तो कोई सजदे में गिरा हुआ है कोई इस बकवास बिदअत को मआज़ल्लाह हज़रते इमामे आली मक़ाम हुसैन رضی اللہ عنہ ——के रहने की जगह समझकर इस अबरक पन्नी से मुरादे मागंता है, मन्नते मागंता है, अरज़िया बांधता है, हाजत पूरी करने वाला ज़ानता है । फिर बाकी तमाशे बाजे ताशे मर्दो औरतों का रातों को मेला और तरह तरह के बेहुदा खेल इन सब पर हावी है ।

गर्ज़ के मोहरमुल हराम का महीना अगली शरीअतो से इस

शरीअते पाक तक निहायत ही ब बरकत और इबादत का वक्त ठहेरा हुआ था । इन बेहुदा रसमों ने जाहीलाना और फ़ासेकाना मेलों का ज़माना कर दिया । फिर वबाल का वो जोश हुआ के ख़ैरात को बतौरे खैरात भी न रख़ा, अब दिख़ावा और शेखी बघ़ारना ऐलानिया होता है फिर वो भी येह नहीं के सीधी तरह मोहताजो को देदें बल्कि छतों पर बैठ कर फेकेंगे रोटियाँ ज़मीन पर गिर रही हैं और अल्लाह के रिज़्क की बेअदबी होती है । पैसे मिट्टी में गिर कर गायब होते है । माल की बरबादी होती है मगर नाम तो हो गया के फलाँ साहब लंगर लुटा रहे हैं ।

अब बहारे मोहर्रम के फ़ुल खिले, ताशे बाजे बजाते चले, रंग रंग के खेलो की धूम, बाज़ारी औरतों का हर तरफ़ हुजूम, शहेवानी मेलो की पूरी रस्मे, जश्ने फ़ासेकाना ये कुछ और इसके साथ ख़्याल येह के गोया येह उनका बनाया हुआ ड़ांचा (ताज़ीया) खास हज़राते शोहदाए किराम अलैहेमुर रिज़वान (यानी करबला के शहीदो) के पाक जनाज़े है ।

"अए मोमीनों उठाओ जनाज़ा हुसैन का" ----ع

गाते हुऐ मसनूवी (नक़ली) करबला पहुँचे । वहाँ कुछ नोचा उतारा बाकी तोड़ ताड़ कर दफ़न कर दिया येह हर साल माल की बरबादी का जुर्म व वबाल अलग है ।

अल्लाह तआला हज़राते शोहदाए किराम करबला علیہم الرضوان والثناء —के सदके में मुसलमानों को नेक तौफ़ीक बख़्शे और बिदआत से तौबा दे आमीन आमीन !

ताज़ीया दारी के, इस गैर पसंदीदा तरीके का नाम बिल्कुल बिदअत व ना जाइज़ व हराम है इस खुराफ़ात के ज़ाहिर ने अस्ल रोज़े की नक्ल को भी अब ख़तरे में ड़ाल दिया हैं के इसमें बिदअत वालो से मुशाबेहत और ताज़ीया दारी की तोहमत का ख़तरा है और आईनदह अपनी औलाद और अच्छे अकीदे वालो के लिये बिदअत का अन्देशा हैं ।

—— وما یودی الی محظور محظور ——

हदीस में है ---------

اتقوا مواضع التہم۔

तरजमा :- तोहमत की (बुरी) जगहो से परहेज़ करो । और आया हैं ।

من كان يومن بالله واليوم الآخر فلا يقفن مواقف التهم۔

तरजमा :- और जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रख़ता है उसे चाहिये के तोहमत की जगहो पर न जाए ।

लिहाज़ा करबलाए मोअल्ला (इमामे हुसैन का रोज़ा) अब सिर्फ कागज़ पर सही नक्शा लिखा हो (यानी तस्वीर) इसे तबर्रूक की नियत से पास रखने की इज़ाज़त हो सकती हैं ।

नबी صلی اللہ علیہ وسلم की चीज़ो और तबर्रूकाते शरीफ़ा की तअज़ीम मुसलमान का सबसे बड़ा फर्ज़ हैं । ताबूते सक़ीना जिसका ज़िक्र कुरआन मजीद में हैं जिसकी बरकत से बनी इसराईल हमेशा काफ़िरो पर फ़तह पाते थे उसमें क्या था بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ मूसा और हारून علیہ الصلوٰۃ والسلام के छोड़े हुऐ तबर्रूकात से बची हुई चीज़े थी । मूसा علیہ السلام का असा (लाठी) और उनकी नालैने मुबारक (जुतियाँ मुबारक) और हारून—علیہ الصلوٰۃ والسلام—का इमामा वगैरा ।

लिहाज़ा बहुत सारे सुबूतों से येह बात साबित के जिस चीज़ को किसी तरह भी हुज़ूरे अकदस صلی اللہ علیہ وسلم—से कोई तअल्लुक होता या आपके बदने पाक से छुने का तअल्लुक होता, सहाबा, ताबाईन और अइम्मा-ए-दीन हमेशा उसकी ताज़ीम व इज़्ज़त करते और उससे बरकत हासिल फ़रमाते । और दीने हक़ के मोअज़्ज़म इमामो ने इसके मुतअल्लिक वज़ाहत की इसके लिये किसी सुबूत की भी ज़रूरत नहीं बल्के जो चीज़ हुज़ूरे अकदस صلی اللہ علیہ وسلم—के नामे पाक से मशहूर हो उसकी तअज़ीम दीन की निशानियों में से हैं ।

„शिफ़ा शरीफ़„ "मवाहिबुल दुनिया" और "मदारिज शरीफ़" वगैरा में है ------------------ من اعظامه صلی الله علیه وسلم اعظام جمیع اسبابه وما لمسه او عرف به صلی الله تعالیٰ علیه وسلم۔

यानी रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की तअज़ीम में से उन तमाम चीज़ो की तअज़ीम ज़िनको नबी صلی اللہ علیہ وسلم से कुछ तअल्लुक हो और जिसे नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने छुआ हो या जो हुज़ूर के नामे पाक से मशहूर हो ।

यहाँ तक के बराबर अइम्माए दीन और उलमाए किराम नाले अकदस की नक़्ल व उसकी तस्वीर की ताज़ीम फ़रमाते रहे और इससे सैकड़ो मुसीबतो में मद्दे पाई और इसकी फ़ज़ीलत के बारे में मुस्तकील किताबे लिखी ।

जब नक़्शे (तस्वीर) की येह बरकत व अज़मत है तो ख़ुद नालैने अकदस की अज़मत व बरकत ख़्याल क़ीजिए फिर रवाये अकदस, जुब्बए मुक़द्दसा और इमामा शरीफ़ पर नज़र क़िजिए फिर इन तमाम चीज़ो व तबर्रूकाते शरीफ़ा से हज़ारो दर्जे आज़म आला, इज़्ज़त के लाएक हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم के तराशे हुऐ नाखुने पाक हैं के पहले वाली तमाम चीज़े आप के इस्तेमाल की चीज़े थी और येह बदन का हिस्सा है और इससे आज़म व अरफ़ा और अज़मत वाले एहतराम के लाएक हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم की दाढ़ी मुबारक का मूए (बाल) मुबारक है । मुसलमान का ईमान गवाह हैं के सातों आसमान व ज़मीन हरगिज़ एक बाल शरीफ़ की अज़मत को नहीं पहुँच सकते ।

अभी अइम्माए दीन की इन बातों से मालूम हो गया के तअज़ीम के लिए न यकीन की ज़रूरत हैं न कोई ख़ास सनद (सुबूत) बल्के सिर्फ़ हुज़ूर के नामे पाक से उस चीज़ का मशहूर होना काफ़ी है । ऐसी जगह बे अक़्ल इंसान सुबूत से बाज़ न रहेगा मगर बीमार दिल जिस में न अज़मते शाने मुहम्मद صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم न मुकम्मल ईमान ।

अल्लाह عزوجل फ़रमाता हैं -----------

وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ

तरजमा :- अगर वोह झूटा है तो उसके झूट का वबाल उस पर और अगर सच्चा है तो तुम्हें पहुँच जाएँगे बाज़ वोह अज़ाब जिनका वोह तुम्हें वादा देता है ।

और खास कर जहाँ सुबूत भी मौजूद है फिर तो तअज़ीम, उसकी अहेमियत, और इज़्ज़त से बाज़ नहीं रह सकता । मगर कोई खुला काफ़िर या छुपा मुनाफ़िक ! والعیاذ باللہ تعالیٰ !

येह क़हेना के आज कल अक्सर लोग मसनवी (नक़ली) तबर्रूकात लिए फ़िरते हैं । अगर बिना किसी ख़ास शख़्स का नाम लेकर न कहॉ यानी किसी ख़ास शख़्स पर इसकी वजह से इल्ज़ाम या बदगुमानी मकसद न हो तो इसमें कुछ गुनाह नहीं । और बगैर किसी शराई सुबूत के किसी ख़ास शख़्स की निसबत हुक्म लगा देना के येह उन्हीं में से हैं जो नक़ली तबर्रूकात लिये फ़िरते है तो ज़रूर नाजाइज़, गुनाह और हराम है । के उसका मकसद सिर्फ़ बदगुमानी, और बदगुमानी से बड़ कर कोई झूटी बात नहीं ।

रसुलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते हैं ।

ایاکم والظن فان الظن اکذب الحدیث.

तरजमा :- बदगुमानी से बचो के बदगुमानी सबसे बड़ कर झूटी बात है। अइम्माए दीन फ़रमाते हैं -------

انما ینشا الظن الخبیث من القلب الخبیث.

तरजमा :- ख़बीस गुमान ख़बीस दिल से ही पैदा होता है ।

तबर्रूकाते शरीफ़ा जिसके पास हो, उनकी ज़ियारत कराने पर लोगों से कुछ माँगना सख़्त बुरा हैं । जो तन्दुरूस्त हो और आज़ा सही रख़ता हो, नौकरी, चाहे मज़दूरी, अगरचे बोझ ढ़ोने के ज़रीये से रोटी कमा सकता हो उसे सवाल करना हराम हैं ।

रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते है ।

لا تحل الصدقۃ لغنی ولا لذی مرۃ سوی.

तरजमा :- ग़नी (पैसे वाले) या तन्दुरूस्त के लिये सदका लेना हलाल नहीं

उलमा फ़रमाते है------

ماجمع السائل بالتکدی فھوالخبیث

तरजमा :- साइल (सवाल करने वाला भिक़ारी) जो कुछ माँगकर जमा करता हैं वोह ख़बीस है ।

इस पर एक पहेचान येह हुई, दूसरी पहेचान ज़्यादा सख़्त येह हैं के दीन के नाम से दुनिया कमाता हैं और یشترون بآیاتی ثمنا قلیلا ———के गुरूप में दाख़िल होता हैं ।

तबर्रूकाते शरीफ़ा भी अल्लाह—عزوجل———की निशानियों में से उमदह निशानियाँ हैं । उनके ज़रीये से दुनिया की ज़लील कमतर पूंजी (रक्कम) हासिल करने वाले दुनिया के बदले दीन बेचने वाले है और एक पहेचान सख़्त तर येह हैं के अपने इस बूरे मकसद के लिए तबर्रूकाते शरीफ़ा को शहर ब शहर दर बदर लीये फ़िरते हैं हर अएरे गएरे के पास ले जाते हैं येह तबर्रूकात की सख़्त तौहीन हैं ।

खलीफ़ा हारून रशीद–رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ–ने आलिमें दारूल हिजरत सैय्यदना इमाम मालिक-رضی اللہ عنہ——से दरख़ास्त की थी के उनके यहाँ खलीफ़ा के लड़को को पढ़ाया करे इरशाद फ़रमाया मैं इल्म को ज़लील न करूंगा, उन्हें पढ़ना मंजूर है तो ख़ूद हाज़िर हुआ करें खलीफ़ा ने अर्ज़ कि वोहीं हाज़िर होंगे मगर और तलबा पर उनको बरतरी दीजाए, फ़रमाया येह भी न होंगा सब एक जैसे रखे़ जाएगे आखिर खलीफ़ा को यही मंजूर करना पड़ा ।

यूँ ही इमाम शरीफ़ नख़्फी से खलीफ़ाए वक्त ने चाहा था के उसके महल आ कर शहज़ादो को पढ़ा दिया करें । उन्होंने इनकार किया इस पर खलीफ़ा ने कहाँ आप अमीरूलमोमेनीन का हुक्म मानना नहीं चाहते । फ़रमाया येह नहीं बल्के मैं इल्म को ज़लील नहीं करना चाहता ।

रहा येह के बे उसके माँगे ज़ियारत करने वाले कुछ उसे दे और येह ले ले इसमें तफ़सील से शरीअत का कानून येह हैं के -

المعہود عرفاً کالمشروط لفظاً جो लोग तबर्रूकाते शरीफ़ा शहर ब शहर लिये फिरते है उनकी नियत व आदत साफ़ मालूम के इसके एवज़ रूपया व माल जमा करना चाहते हैं येह मक़सद न हो तो क्यों दूर दराज़ सफ़र की तकलीफ़ उठाये, रेल्वे के क़िराये दे, अगर कोई उनमें ज़बानी कहे भी के हमारी नियत सिर्फ़ मुसलमांनो को ज़ियारत से बेहरामन्द करना (फ़ायदा पहुँचाना) है तो उनका हाल इनके कहेने को साफ़ झूटा कर रहा है ।

इनमें आम तौर पर वोह लोग हैं जो ज़रूरी तहारत व नमाज़ के मस्अलो से भी वाकीफ़ नहीं, इन मसाइल को सिखने के लिये कभी दस पाँच कोस ही किसी आलिम के पास घर से आदा मिल जाना पसंद न किया । मुसलमानों को ज़ियारत कराने के लिये हज़ारो कोस सफ़र करते है । फिर जहाँ ज़ियारत करवाये और लोग कुछ न दे वहाँ इन साहिबो के गुस्से देखिये ।

पहला हुक्म येह लगाया जाता है के तुम लोगों को हुज़ूरे अक़दस—صلی اللہ علیہ وسلم से कुछ मुहब्बत नहीं, गोया इनके नज़दीक मुहब्बते नबी———صلی اللہ علیہ وسلم और ईमान इसी पर टीके हुए है के हराम तौर पर कुछ उनकी नज़्र कर दिया जाए । फिर जहॉ कहीं मिले भी मगर इनके ख़्याल से थोड़ा हो, उनकी सख़्त शिकायते और बुराईयाँ उनसे सुन लीजिये । अगरचे वोह देने वाले उलमा और नेक लोग हो, और हलाल माल से दिया हो । और जहॉ पेट भर के मिल गया वहॉ की लम्बी चौड़ी तारीफ़े ले लीजिये अगरचे वोह देने वाले फ़ासिक व फ़ाजिर बल्के बद मज़हब हो और हराम माल से दिया हो

तो साफ़ मालूम है के वोह ज़ियारत नहीं कराते मगर लेने के लिये, और ज़ियारत करने वाले भी जानते हैं के ज़रूर कुछ देना पड़ेगा । तो अब येह सिर्फ़ सवाल ही न हुआ बल्के ज़ियारते शरीफ़ा पर किराया देना हो गया और बहुत सी वजहो से हराम है।



(1)→ज़ियारते तबर्रूकाते शरीफ़ा कोई ऐसी चीज़ नहीं जिस पर किराया लिया जा सके ।

كما صرح به فى رد المختار وغيره ان ما يؤخذ من النصارى على زيارة بيت المقدس حرام وهذا اذا كان حرامًا اخذه من كفار دور الحرب كالروس وغيرهم فكيف من المسلمين ان هو الا ضلال مبين۔

तरजमा :- जो बैतुल मुक़द्दस की ज़ियारत पर इसाईयों से लिया जाये हराम है और येह हराम होना दरूल हरब (रूस वगैरा) के काफ़िरों से लेने की सूरत में है तो मुसलमानों से लेना कैसा होंगा येह तो खुली गुमराही है ।

(2)→उजरत मुकर्रर नहीं होती क्या दिया जाएगा और जो किरायां शरीअत में जाइज़ है उनमें भी उजरत मजहुल रखी जाना उसे हराम कर देता है । न के जो सिरे से हराम है के हराम पर हराम हुआ और येह हुक्म जिस तरह घुमने वाले साहिबो के लिये है मुकामी हज़रात भी इससे महफ़ूज़ नहीं जब के पैसा लेने की नियत से ज़ियारत करते और इनका येह तरीक़ा मालूम व मशहूर हैं ।

अगर किसी ख़ुदा के बन्दे के पास कुछ तबर्रूकाते शरीफ़ा हो और वोह उन्हें तअज़ीम के साथ अपने मक़ान में रखे और जो मुसलमान उसे देखने की दरख़ास्त करे और वोह सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिये उसे ज़ियारत करा दिया करे, कभी किसी रक्म, नज़राने की तमन्ना न रखे, फिर अगर वो गरीब नहीं और मुसलमान बतौरे खूद कम या ज़्यादा उसकी मदद की नियत से उसे कुछ दे, उसके लेने में उसको कुछ हर्ज नहीं बाकी येह घुमने वाले साहिबो को आम तौर पर और मुकामी साहिबो में ख़ास उनको जो इस काम पर रूपया व नज़्र लेने में मशहूर व मअरूफ़ हो ऐसो के लिये शरीअत में जाइज़ होने की कोई सूरत नहीं हो सकती ।

मगर एक येह के ख़ुदाए तआला उनको तौफ़ीक दे के नियत अपनी दुरूस्त कर ले और इस शर्त के साथ साफ़ ऐलान के साथ हर जलसे में कह दिया करे के मुसलमानों येह तबर्रूकाते शरीफ़ा तुम्हारे नबी صلی اللہ علیہ وسلم या फलाँ वली मोअज़्ज़्ज़ व मुकर्रम के हैं के सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिये तुम्हें इनकी ज़ियारत कराई जाती हैं। हरगिज़ हरगिज़ कोई बदला या रक़म क़माना मकसद नहीं इसके बाद मुसलमान कुछ नज़्र करे तो उसे क़ुबूल करने में कुछ हर्ज न होंगा

"फतावा काज़ी खॉ"वगैरा में है।

ان الصريح يفوق الدلالة.

तरजमा :- ज़ाहिर को छुपी हुई चीज़ पर बरतरी (अहमियत) हासिल है।

और उसकी सही नियत पर दलील येह होंगी के कम पर नाराज़ न हो बल्के अगर जलसा खत्म हो जाए, बहुत सारे लोग ज़ियारते करके यूहीं चले जाए और कोई पैसा न दे जब भी दिल तंग न हो, और उसी ख़ूशी व शादमानी के साथ मुसलमानों को ज़ियारत कराया करे उस सूरत में येह लेना देना दोनों जाइज़ व हलाल होंगे और ज़ियारत करने वाले और ज़ियारत कराने वाला दोनों मुसलमान की मदद करने का सवाब पाएगें। उसने सआदत व बरकत दे कर उनकी मदद की और उन्होंने दुनिया के सरमाये से फ़ायदा पहुँचाया।

रसूलुल्लाह-صلی اللہ علیہ وسلم-फ़रमाते हैं।

"من استطاع منكم ان ينفع اخاه فلينفعه" (رواه مسلم فی صحیحه عن جابر بن عبد اللہ رضی اللہ عنہما)

तरजमा :- तुम में जिससे हो सके व अपने मुसलमान भाई को नफ़ा पहुँचाए।

(रिवायत किया इसे मुस्लिम ने हज़रत जाबीर बिन अब्दुल्लाह रदीअल्लाहो अन्होमा से)

और फ़रमाते है: صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم-------

"اللہ فی عون العبد ما دام العبد فی عون اخیه۔" (رواہ الشیخان)

तरजमा :- अल्लाह अपने बन्दे की मदद में है जब तक बन्दा अपने

भाई की मदद में है ।

(रिवायत किया हज़रत सिद्दीके अकबर व उमरे फ़ारूक रदीअल्लाहो तआला अन्होमा ने)

इस पर और ख़ुसूसियत - जब येह तबर्रूकात वाले हज़राते सादाते किराम (सैय्यद) हो तो अब इनकी ख़िदमत आला दर्जे की ख़िदमत व सआदत है ।

रसूलुल्लाह—صلی اللہ علیہ وسلم—फ़रमाते हैं ----------

जो शख्स औलादे अब्दुल मुत्तलिब में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करे और उसका सिला दुनिया में न पाए तो मैं ब नफ़्से नफ़ीस (यानी ख़ूद) रोज़े कियामत उसका सिला अता फरमाऊँगा ।

अगर ज़ियारत कराने वाले को इसकी तौफ़ीक न हो तो ज़ियारत करने वाले को चाहिये के ख़ूद उनसे साफ़ ऐलानिया कह दे के नज़्र कुछ न दी जाएगी अल्लाह की रज़ा के लिये अगर आप ज़ियारत कराते है तो कराईये इस पर अगर वोह साहब न माने तो हरगिज़ ज़ियारत न करे । के ज़ियारत एक मुस्तहब (अच्छ काम है) और लेन देन हराम । किसी मुस्तहेब चीज़ को हासिल करने के लिये हराम इख़्तियार नहीं कर सकते ।

"अश्बाह व नज़ाएरा" में है ।

ماحرم اخذہ حرم اعطاؤہ۔

तरजमा :- जिसका लेना हराम उसका देना भी हराम ।

"दुर्रे मुख़्तार" में है ।

الآخذ والمعطی آثمان۔

तरजमा :- लेने और देने वाले दोनों गुनाह गार हैं ।

इसी दुर्रे मुख़्तार में साफ़ खुलकर है ।

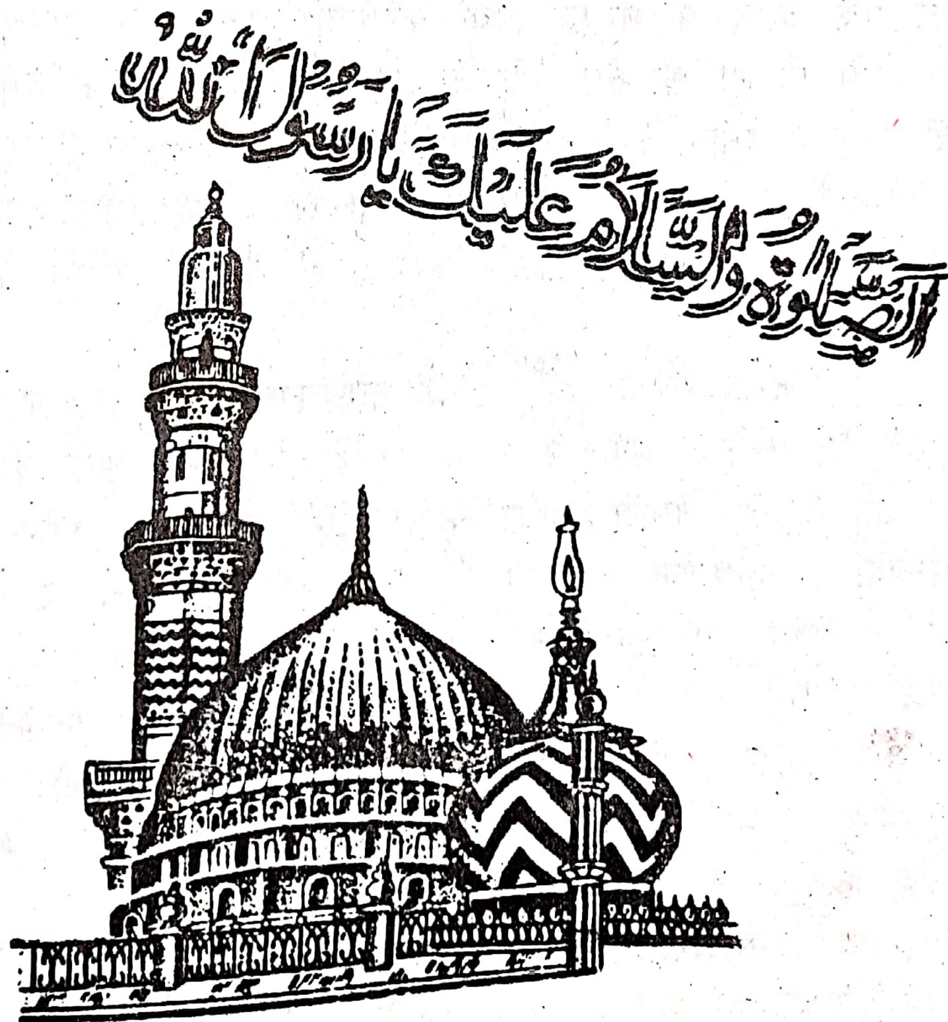
जो तन्दुरूस्त हो और कमाने की ताक़त रख़ता हो उसे देना हराम है के देने वाले उसके हराम सवाल पर उसकी मदद करते है अगर न दे तो मजबूर हो कर खूद कमाए ।

और अगर उसकी अर्ज़ ज़ियारत कराने वाले साहब ने कुबूल करली तो अब सवाल उजरत का दरमियान से उठ गया। बे झिझक ज़ियारत करे दोनो के लिये अज्र व सवाब है इसके बाद अपनी हैसियत के मुताबिक अगर कुछ नज्र कर दे तो येह लेना और देना दोनो के लिये हलाल और दोनो के लिये अज्र है। ब हम्दुलिल्लाह फकीर का यही मामूल है और तौफीके खैर अल्लाह तआला के जुम्मे करम पर है।

واللہ تعالیٰ اعلم

मुहम्मदी, सुन्नी, हनफी, कादरी,
अब्दुल मुस्तफा अहमद रज़ा खाँ

كتبہ
عبدہ المذنب الفقیر احمد رضا عفی عنہ محمدن المصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ



दुनिया-ए-अहले सुन्नत के लिए एक अज़ीम

खूशख़बरी

खूशख़बरी । खूशख़बरी ।

इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत

इमाम अहमद रज़ा रवॉ फाज़िले बरेलवी

का तरजमाए कुरआन यानी

कन्जुल ईमान

और साथ में

सदरूल फाज़िल हज़रत मौलाना **नईमुद्दीन** मुरादआबादी

की तफसीर

खज़ाएनुल इरफान

अब **हिन्दी** में

हिन्दी तरजमा

मुहम्मद फारूक रवॉ अशरफी रिज़वी

पारो की शक्ल में अपनी पूरी शान व शौकत के साथ

मन्ज़रे आम पर आ रहा हैं

इश्क व इरफान में डूबी हूई कलम से एक आशिके रसूल का आसान व बा महावरह कुरआने अज़ीम का इशक में डूबा हुआ तरजमा जिसे मकताबतुल मदीना मुंबई पहली बार पेश करने की सआदत हासिल कर रहा है ।

नाशिर :- **मकताबतुल मदीना, मुबंई**